

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।

मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय ॥ गीता 1.1

श्रीमद्भगवद्गीता का प्रथम श्लोक ! चेतावनी और प्रेरणा साथ - साथ । भेद बुद्धि, पक्षपात पूर्ण संकीर्ण सोच ही वैमनस्य - विद्वेष, कलह-क्लेश का मूल कारण हैं! समबुद्धि - उदार सोच कर्म को ही धर्म बना सकती है ! धर्मक्षेत्रे-कुरुक्षेत्रे का लाक्षणिक अभिप्राय यही है ।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥ गीता 2-47

अपने कर्तव्य के प्रति पूर्ण समर्पित निष्ठा, प्रमाद, कोताही, लापरवाही नहीं! मुझे क्या मिलेगा यह सोच कृपण, संकीर्ण बनाती है, क्षमताओं को कमजोर करती है! मैं क्या दे सकता हूँ- यह भाव बनाकर कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ें, अनुभव करें मानसिक सन्तुष्टि क्षमताओं का विकास, सामाजिक सम्मान एवं ईश्वरीय कृपा ।

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः ।

लोकसङ्ग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि॥ गीता 3.20

कर्तव्य पथ पर बढ़ते हुए अच्छा आदर्श आवश्यक है। लोक संग्रह के भाव से कर्म हों, आसक्ति निज हित अथवा अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए नहीं । परहित, जनहित, लोकहित की व्यापक सोच बनाएं! राजा जनक का उदाहरण इसी भाव से है। ऊँच-नीच की दूरियाँ मिटाने, सामाजिक समता, समरसता सद्भावना लाने एवं राष्ट्रीय गौरव बढ़ाने हेतु यह श्लोक

विशेषतः 'लोक संग्रह' शब्द अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूरैरपि मुमुक्षुभिः ।

कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वं पूर्वतरं कृतम्॥ गीता 4-15

अपने-अपने क्षेत्र का समृद्ध अतीत देखें । जिन्होंने अच्छे संकल्प, अच्छी कर्तव्यनिष्ठा के साथ अच्छे आदर्श प्रस्तुत किये, अपने कार्य क्षेत्र के साथ-साथ समाज एवं राष्ट्र का सम्मान बढ़ाया, आदर्श, प्रेरणा के रूप में अपना नाम बनाया- यह गीता मंत्र अनूठी प्रेरणा है- अपने कर्म एवं जीवन यात्रा को उसी पथ पर आगे बढ़ाने के लिये ।

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि संङ्ग त्यक्त्वा करोति यः ।

लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥ गीता 5.10

कर्म करते हुए अहंकार बुद्धि नहीं! ईश्वरीय कृपा का आधार, ईश्वरीय कृपा से मुझे इस पद या दायित्व के रूप से समाज, राष्ट्र एवं मानवता की सेवा का सौभाग्य मिला है ऐसा भाव किसी व्यक्तिगत अथवा बाह्य वातावरण की बुराई का प्रभाव अपने ऊपर नहीं, अपनी अच्छाई की सुबास वातावरण में ठीक वैसे ही जैसे पानी या कीचड़ में रहते हुए कमल ।

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन ।

सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः । । गीता 6.32

मुस्कुराती मानवता का महानतम् आदर्श है यह गीता मंत्र । ईश्वरीय चेतना सब में सम है, इस दृष्टि से सबके साथ अपनापन किसी को सुखी देखकर प्रसन्नता ! दुखी देखकर स्वयं को पीड़ा! परम योगी की गीता - दिव्यता ! साकार होने पर क्यों होगा भ्रष्टाचार - अत्याचार?

मतः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय ।

मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥ गीता 7.7

जाति, वर्ग, वर्ण, रूप, रंग अनेक हैं अपने-अपने प्रारब्ध अनुसार कोई निर्धन - धनवान, पदाधिकारी-कर्मचारी हो सकते हैं, लेकिन ईश्वरीय चेतना सब में एक है, ठीक वैसे ही, जैसे माला में मणियाँ; मणके अनेक, लेकिन सूत्र एक। मानसिक शांति पारिवारिक सद्भावना, सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता एवं विश्व बन्धुत्व की दिव्यता छिपी हुई है इस गीता भाव में ।

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च ।

मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मा मेवैष्यस्य संशयम् ॥ गीता 8-7

जीवन है तो संघर्ष साथ रहेंगे ही। संघर्षों में मन घबराये उकताये नहीं, मनोबल मजबूत रहे- इसी के लिये है यह गीता प्रेरणा जीवन संघर्षों में भगवान का स्मरण बना रहे। ईश्वरीय ध्यान स्मरण जीवन की ऊर्जा, शक्ति, शान्ति और बल मजबूत सम्बल है। मन बुद्धि भगवान को अर्पित अर्थात् 'साथी' एवं जीवन रथ के सारथी भगवान्! चिन्ता मिटेगी सफलता मिलेगी।

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम् ।

हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते॥ गीता 9-10

प्रकृति ईश्वर द्वारा संचालित है। प्रकृति के साथ ईश्वरीय आस्था जुड़ने से प्रकृति सम्मान पायेगी, प्रदूषण कम होगा । प्रकृति या समूची सृष्टि परिवर्तन के चक्र में है लेकिन ईश्वरीय सत्ता अधिष्ठान है। वैज्ञानिक प्रमाणिकता का ग्रन्थ है भगवद्गीता। बिना किसी स्थिर सत्ता के परिवर्तन का चक्र चल ही नहीं सकता - यह सर्वमान्य तथ्य है।

महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा ।

मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ।। गीता 10.6

कितना प्रेरक भावार्थ है इस गीता श्लोक में बिना भेद भाव के समूची सृष्टि, प्रजा ईश्वरीय भाव संकल्प से अर्थात् सब एक ही ईश्वर के हैं, उससे हैं ! सृष्टि के प्रारम्भ में ऋषि, मनु- फिर आगे प्रजा ! इस का अभिप्राय ऋषियों की त्याग, तप परहित की परम्परा जीवन का आधार बनें और मानव हैं, मानव बन कर रहें, मानवता का सम्मान करें !

दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता ।

यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासतस्य महात्मनः ।। गीता 11-12

ईश्वरीय सत्ता विराट प्रकाशमय है। इस गीता श्लोक अनुसार हजार सूर्यों का प्रकाश एक साथ भी ईश्वरीय प्रकाश की तुलना नहीं कर सकता। ईश्वरीय अंश होने से जीव मात्र का स्वरूप भी प्रकाश है। इसीलिये अन्धकार से प्रकाश हमारी स्वाभाविक परम्परा है। अज्ञानता के अन्धकार में ही जीव बुराइयों में प्रवृत्त होता है, विवेक ज्ञान का प्रकाश सन्मार्ग दिखाता है, बुराइयों में गिरने से बचाता है ! आओ बढ़ें अन्धकार से प्रकाश की ओर !

सन्नियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः ।

प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः।। गीता 12.4

व्यक्तित्व विकास में अद्भुत व्यापक निखार का मूल मंत्र है यह गीता श्लोक । खाने-पीने, बोलने, देखने आदि में संयम की स्थिति । प्राणी, पदार्थ, परिस्थितियों में समता एवं विशेष रूप से समस्त प्राणियों के प्रति हित चिन्तन । 'सर्वभूतहिते रताः' जैसे आदर्श गीता वाक्य सिद्ध करते हैं कि यह ग्रन्थ हिन्दुओं की आस्था तो है, लेकिन केवल हिन्दुओं के लिये नहीं, समग्र प्राणि जगत के कल्याण की अनूठी वैश्विक प्रेरणा है।

बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च ।

सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत् ॥ गीता 13-15

परमात्मा हर कण में है, हर क्षण में है। भीतर है, बाहर है ! दूर से दूर एवं निकट से निकट वही है। हम जो हैं, जहाँ हैं, जैसे हैं- परमात्मा की निकटता का, उनके अपनत्व का अनुभव कर सकते हैं। कहीं, किसी प्रकार का भेदभाव नहीं एक विशेष अति उपयोगी प्रेरणा - 'बाहर' 'सर्वव्यापी रूप से परमात्मा हमारे कर्मों का साक्षी है, भीतर' 'अन्तर्यामी' रूप से हमारे विचारों भावों का ! शुद्ध भाव एवं सत्कर्मों की अनूठी प्रेरणा !

कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम्।

रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम् ॥ गीता 14.16

सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण, जीवन यात्रा में स्वाभाविक हैं। सत्त्वगुण सत्कर्मों में प्रेरित करता है, सत्कर्मों का परिणाम अन्तःकरण की निर्मलता और सुख होता ही है। रजोगुण लोभ, अहंकार, कामनाओं आदि की अधिकता से कर्मों में प्रवृत्त करता है। जहाँ ये वृत्तियाँ हावी होंगी, परिणाम मानसिक विक्षेपता एवं दुःख की स्थिति तमोगुण, प्रमाद, आलस्य, अतिनिद्रा आदि में ही लगाये रखकर जीवन में जड़ता की सी स्थिति बनाता है। बड़े प्रमाद से पुरुषार्थ तथा स्वार्थ से परमार्थ की ओर !

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः ।

गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् ॥ गीता 15.8

शरीर की मृत्यु और उसके साथ यह भी निश्चित कि यहाँ का सब यही छूटना है। लाये नहीं थे, ले जायेंगे नहीं। यहीं मिला है, यहीं के लिये मिला है। साथ जाती है शुभ - अशुभ कर्मों की सुगन्ध या दुर्गन्ध । गीता के इस श्लोक के अनुसार वैसे ही जैसे वायु फूलों के स्पर्श से सुगन्ध तथा गंदगी के ढेर से छूकर दुर्गन्ध लेकर आगे बढ़ती है।

दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता ।

मा शुचः सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ॥ गीता 16.5

सीढ़ी छत की ऊँचाई पर भी ले जाती है, लेकिन संभल कर नहीं चले तो नीचे भी गिरा देती है। मनुष्य जीवन की भी यही स्थिति है। दैवी सदगुणों के आश्रय से मानव देवत्व की ऊँचाई तथा उस माध्यम से चिन्ता, भय, शोक एवं सब प्रकार के कर्म बंधन से मोक्ष पा सकता है, लेकिन अज्ञानतावश दुष्कृतियों,

विकारों में फिसलकर पतन में भी गिर सकता है। गीता का यह भाव प्रेरित कर रहा है- ऐ मानव! चिन्ता मतकर, स्वभाव से तू देवत्व के लिये ही उत्पन्न हुआ है, अपने भीतर के देवत्व को पहचान ।

सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते ।

प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते । । गीता 17-26

परमात्मा रूपी सत्य को स्वीकार करो। 'सत्' की सुन्दर मंगलमय परम्परा जीवन की अनूठी प्रेरणा बन जायेगी। सत् के आधार से बुद्धि-सद्बुद्धि, विचार- सद्विचार, भाव- सद्भाव और आगे सद्गुण, सत्कर्म, सदाचार आदि की स्थिति स्वतः जीवन में आयेगी, जिसकी आज प्रबल आवश्यकता है। सत् अर्थात् परमात्मा को न स्वीकारने से ही जीवन दुर्बुद्धि, दुर्व्यसन, दुष्कर्म, दुर्भाव, दुराचार रूपी पतन में गिरता है।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्धुवा नीतिर्मतिर्मम॥ गीता 18.78

भगवद्गीता के प्रथम श्लोक में धृतराष्ट्र ने संजय से युद्ध परिणाम को लेकर प्रश्न किया था । सम्पूर्ण गीता उपदेश हो जाने पर अंतिम श्लोक में संजय स्पष्ट कहते हैं- राजन्! विजय तो सत्य की ही होगी। सत्ता के समक्ष सत्य कहने की अद्भुत स्थिति जहाँ योगेश्वर कृष्ण हैं अर्थात् जहाँ केवल भोगवाद - भौतिकवाद नहीं 'अध्यात्म' 'योग' का आधार है तथा जहाँ अर्जुन अर्थात् कर्तव्य के प्रति समर्पित निष्ठा है, वहीं श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है । सार रूप में सीधी बात- 'कर्म' के साथ 'धर्म' भौतिकवाद के साथ अध्यात्म, पुरुषार्थ के साथ 'परमार्थ' का समन्वय ही सफलता का मूल मंत्र है।

साभार : जीओ गीता